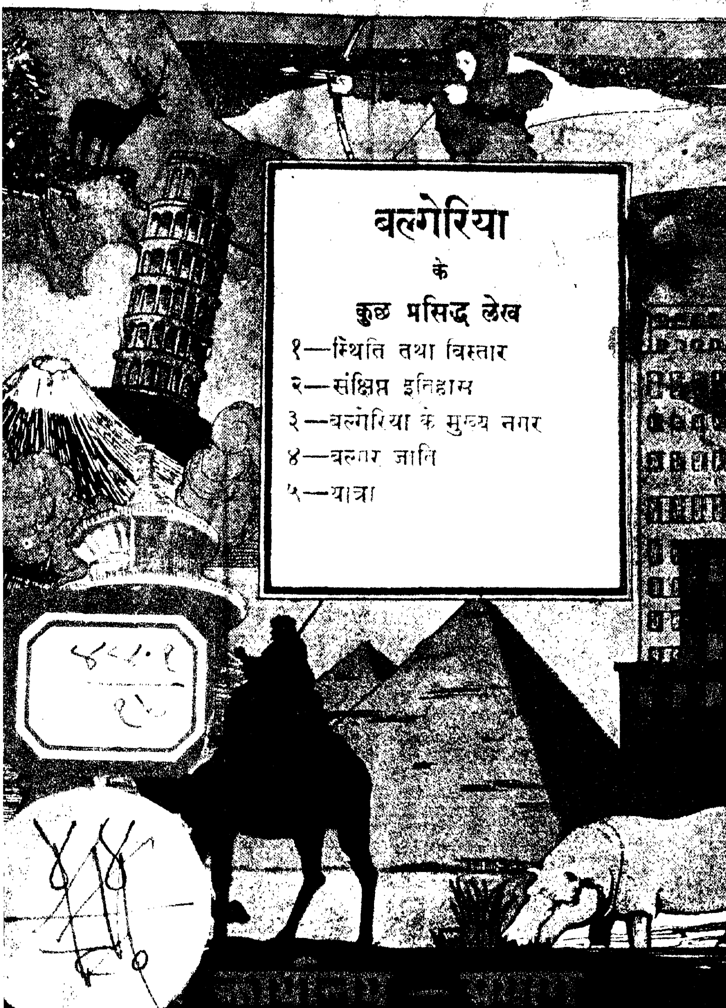
देश दर्शन

बल्गेरिया



बल्गेरिया

के

कुछ प्रसिद्ध लेख

अप्रैल १९४१] देश-दर्शन [वैसाख १९९८

देश-दर्शन

(सचित्र मासिक)

वर्ष २] [संख्या १०

अल्जीरिया

सम्पादक

पं० रामनारायण मिश्र, बी० ए०

प्रकाशक

भूगोल-कार्यालय, इलाहाबाद

Annual Subs. Rs. 4/-
Foreign Rs. 6/-
This Copy As -/6/-

वार्षिक मूल्य ४)
विदेश में ६)
इस प्रति का ।=)

विषय-सूची

स्थिति

स्थिति तथा विस्तार

यह बाल्कन प्रायद्वीप का एक राज्य है। इसका आकार आयताकार है। यह प्रायद्वीप के पूर्व की ओर स्थित है। इस देश का क्षेत्रफल ४०,००० वर्गमील और जनसंख्या ४५ लाख है। दक्षिणी और पश्चिमी सीमायें पर्वतीय प्रदेश होकर जाती हैं और इस देश को योरुपीय टर्की, यूनान और यूगोस्लाविया से अलग करती हैं। डैन्यूब नदी बल्गेरिया और रूमानिया के मध्य सीमा बनाती है। पूर्व की ओर काला सागर है। बाल्कन के पर्वत बल्गेरिया के कृषक प्रदेश को दो भागों में बांट देते हैं। उत्तर का पहाड़ी प्रदेश डैन्यूब नदी की ओर और ऊपर मुर्तज़ा की घाटी तथा बेसिन दक्षिण की ओर धीरे धीरे ढालू होती गई है। रोडोप के ऊँचे प्रदेश के कारण मुर्तज़ा की घाटी एजियन सागर से अलग हो जाती है। मुर्तज़ा के मैदानों का कालासागर की ओर निकास है और वहां पर बर्गस का बन्दरगाह है। डैन्यूब नदी पर रनेचूक का बन्दरगाह और वार्ना में एक दूसरा बन्दरगाह कालासागर की ओर है।

देश दर्शन

प्राकृतिक विवरण

बल्गेरिया देश चार भागों में बँटा है। १—उत्तरी डैन्यूब नदी का ऊँचा प्रदेश, २—बाल्कन प्रायद्वीप की पर्वतीय पेटियाँ, ३—मुर्तज़ा श्रेणी की घाटियाँ तथा बेसिन, रोडोप का ऊँचा प्रदेश जो उत्तर-पश्चिम की ओर होकर बाल्कन श्रेणी से मिलता है तथा वह पश्चिमी पहाड़ी जो स्ट्रूमा घाटी द्वारा अलग है।

१—डैन्यूब नदी का ऊँचा प्रदेश

यह बाल्कन के उत्तरी परतदार शिलाओं तथा डैन्यूब के मध्य स्थित है। डैन्यूब नदी इसकी उत्तरी सीमा बनाती है। रसचूक नगर से डैन्यूब नदी की चौड़ाई कम अथवा अधिक क्रमशः होती गई है। नदी की बल्गे-रिया सीमा ऊँची है और रूमानिया की सीमा नीची है। बसंत तथा ग्रीष्म काल में नदी के अन्दर बाढ़ आती है। गरमी के दिनों में यहाँ मलेरिया बुखार बहुत आता है। जाड़े के दिनों में बड़ा जाड़ा पड़ता है। जाड़े के दिनों में डैन्यूब नदी में बरफ जम जाती है जिससे जहाज़ों



तथा नावों का चलना कठिन हो जाता है। डैन्यूब नदी में बल्गेरिया सीमा के भीतर कोई पुल नहीं बना है।

रसचूक नगर के आगे डैन्यूब दक्षिण-पूर्व की ओर बहती हुई काला सागर में जा गिरती है। वार्ना का बन्दरगाह डैन्यूब के मुहाने के समीप है। मुर्तज़ा बल्गेरिया की सबसे बड़ी नदी है। वह बालकन प्रणाली होकर बहती है। यह नदी सोफिया के ऊँचे (१८००फुट) बेसिन को डैन्यूब के ऊँचे प्रदेश से मिलाती है। सोफिया नगर बल्गेरिया की राजधानी है। बल्गेरिया की दूसरी बड़ी नदी इस्केर है। सोफिया नगर मुर्तज़ा के उपजाऊ मैदान तथा इस्केर नदी की उपजाऊ घाटी से मिला हुआ है। इसलिये सोफिया की स्थिति बड़ी अच्छी है। इस्केर नदी के पूर्व तथा पश्चिम और भी दूसरी नदियाँ बह कर डैन्यूब में गिरती हैं जिनमें यंत्र नदी सब से बड़ी तथा प्रसिद्ध है। इस नदी की घाटियाँ मनुष्य के लिये बड़ी लाभदायक हैं। यहाँ पर जंगल है जहाँ से लकड़ी प्राप्त होती है। घाटियों में उपज अच्छी होती है। इस प्रदेश की मुख्य उपज गेहूँ, मक्का, ईख, अंगूर आदि हैं। घाटियों तथा मैदानों में ही प्रधान नगर तथा गाँव

बसे हैं। त्रनोवो नगर यंत्र घाटी में है। यह नगर किसी समय बल्गेरिया की राजधानी रहा है। यहां से शिप्का घाट (४३६३ फुट ऊँचा) को मार्ग जाता है। पूर्व की ओर प्रोबादी और कामचुक नदियां हैं।

बर्लिन की संधि के पश्चात् इस प्रदेश में बहुत से परिवर्तन हो गये हैं। यहां की भूमि छोटे छोटे किसानों के मध्य बांट दी गई है। बल्गेरिया के निवासी छोटे किसान होते हैं। मक्का भोजन के लिये प्रयोग की जाती है और गेहूँ महँगा होने के कारण वार्ना बन्दरगाह से बाहर भेजा जाता है।

इस प्रांत में शराब बनाने, आटा पीसने, ऊनी कपड़े तयार करने, चमड़ा का सामान बनाने के कारखाने हैं। विडिन और रसचूक नगर में सोने तथा चाँदी का अच्छा काम होता है जिससे बीजँटाइन संस्कृति का ज्ञान होता है।



२—बल्कान पर्वतीय पेटी

यह प्रदेश उच्च प्रदेश से बिलकुल भिन्न है। तिमोल की घाटी से परतदार पर्वतीय पेटी ३७५ मील लम्बी है जो पहले पूर्व-दक्षिण और फिर पूर्व की ओर काला सागर तक चली गई है। इसकर नदी तथा देमीर कापू का दर्रा इस पेटी को तीन भागों में विभाजित कर देते हैं। इन तीनों भागों में मध्यवर्ती भाग बहुत ऊँचा है जिसकी सबसे अधिक ऊँचाई ७,८०० फुट है। यह भाग सबसे अधिक संकरा भी है। पश्चिमी भाग की ऊँचाई ५००० फुट से कुछ अधिक है। पूर्वी भाग निचला है और दो तीन श्रेणियों में बँटा है। एण्टी बल्कान (विपरीत-बल्कान) श्रेणियों का पूर्वी भाग क्राज़ा दाग और पश्चिमी स्नेडना गोरा कहलाता है। यह श्रेणी बाल्कान से उप-बाल्कान नामक घाटी द्वारा अलग कर दिया गया है। उप-बाल्कान (सब बाल्कान) की घाटी बड़ी उपजाऊ है। इस घाटी के पश्चिमी भाग में स्ट्रीमा नदी बहती है। यह नदी मुर्तज़ा नदी की सहायक है। स्ट्रीमा नदी सेडना गोरा और क्राज़ा दाग

को एक दूसरे से अलग करती है। तुँजा नदी मरीटसा नदी की सहायक नदी है और उसके बाएँ तट पर मिलती है।

बल्कान एक ऊँचे प्रदेश की तरह है। उसके ऊपर घास के मैदान हैं और पर्वतीय श्रेणियाँ नहीं हैं। ढालू स्थानों पर बलूत और शफ़तालू वृक्षों के बन हैं। बल्कान प्रान्त में कुछ बस्तियां बसी हैं जिनमें कोटेल और गोबरोओ अधिक प्रसिद्ध हैं। गोबरोओ के समीप उत्तर की ओर कोयला पाया जाता है। दक्षिण की ओर स्लीवनों के समीप भी लोहा मिलता है। इसके सिवा तेल के सोते, ताँबे, सीसे और जस्ते की खानें भी पाई जाती हैं।

इस पर्वतीय भाग में नाज, राई, जौ की उपज होती है। जंगलों में लोग लकड़ी काटने का रोज़गार करते तथा चारकोल जलाते हैं। चरागाहों में लोग गल्लेबानी का काम करते हैं। कोयले के कारण जल-शक्ति (बिजली) भी कुछ तयार कर ली जाती है जिससे कुछ वहाँ के स्थानीय छोटे कारखाने चलाये जाते हैं। वहां पर ऊनी कपड़े, मिट्टी के बर्तन, चाकू, कैंची, तांबे



के बर्तन और लकड़ी के सामान तयार करने का भी रोज़गार होता है। यह प्रान्त पहाड़ी होने के कारण भूमिपतियों का वर्ग नहीं बन सका और लोगों के मध्य राष्ट्रीयता का भाव ही सदैव बना रहा। बल्गेरिया के पुस्तकालय सर्व प्रथम इसी प्रान्त के कोटेल तथा गाव्रोओ नगर में स्थापित हुये थे। बल्गेरिया के कुछ पूर्वकालीन नेता स्रेडना गोरा प्रान्त के निवासी थे।

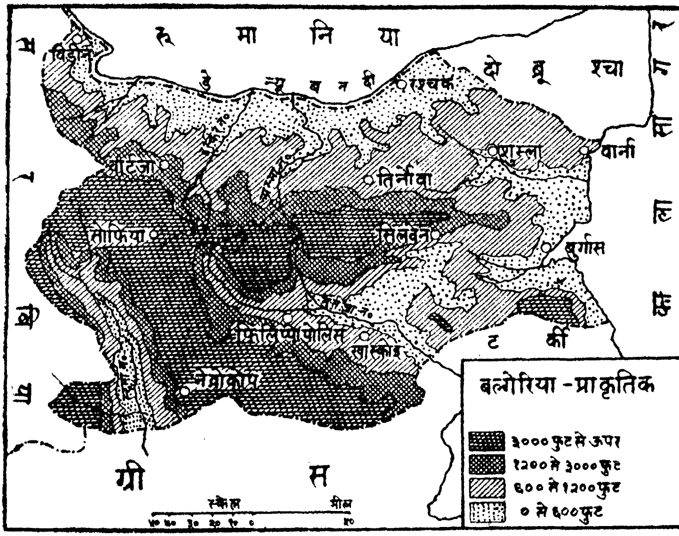


देश दर्शन

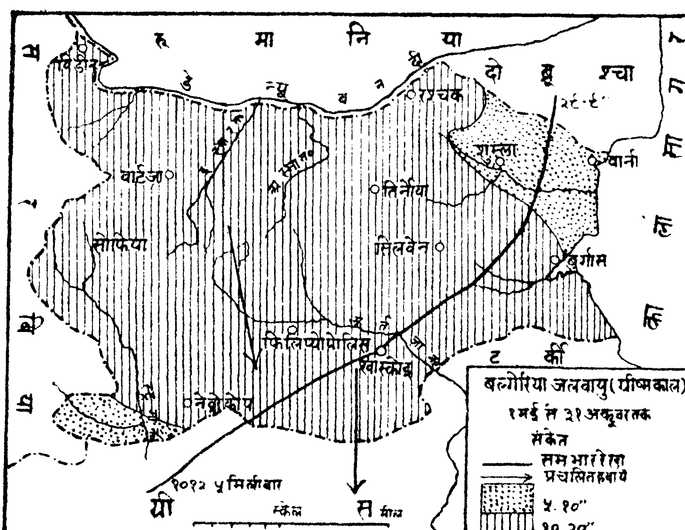
३—मुर्तजा प्रान्त के बेसिन तथा घाटियाँ

मरीट्सा प्रान्त में सब बल्कान घाटी की भी गणना हो जाती है। यह प्रान्त और दूसरे प्रान्तों से बहुत भिन्न है। यह पूर्वी रूमेलिया का मध्यवर्ती भाग है। यहां की जलवायु में रूम सागरी जलवायु का प्रभाव है। वहां पर चावल, रुई, तम्बाकू, अंगूर और भांति भांति के दूसरे फल होते हैं। प्रान्त में रेशम के कीड़ों के पालने का भी रोजगार होता है। गेहूँ की उपज भी होती है। यहां पर फिलिप्पोपोलिस (पमोवदोव) ऐसे प्राचीन नगर हैं जो प्राचीन इतिहास बताते हैं। यह नगर सैनिक दृष्टि से बड़े ही उपयोगी हैं। बर्लिन की संधि के पहले तुर्क, यूनानी, स्लाव और बल्गेरियन लोग मिश्रित भाग में रहते थे परन्तु बर्लिन की संधि के पश्चात् बल्गेरियन लोगों की संख्या बढ़ गई है।

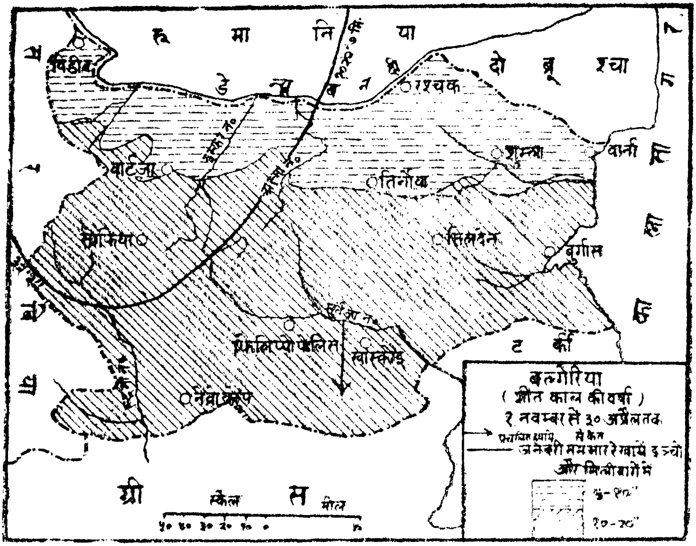
इस प्रान्त के दो प्रधान भाग हैं। प्राकृतिक भौगोलिक दृष्टि से सब-बाल्कन प्रान्त अधिक उपयोगी है। किसी समय में इस प्रान्त होकर एक नदी पश्चिम को पूर्व की ओर बहती थी और कालासागर में बर्गस बन्दरगाह के समीप गिरती थी। अब वहां पर बहुत

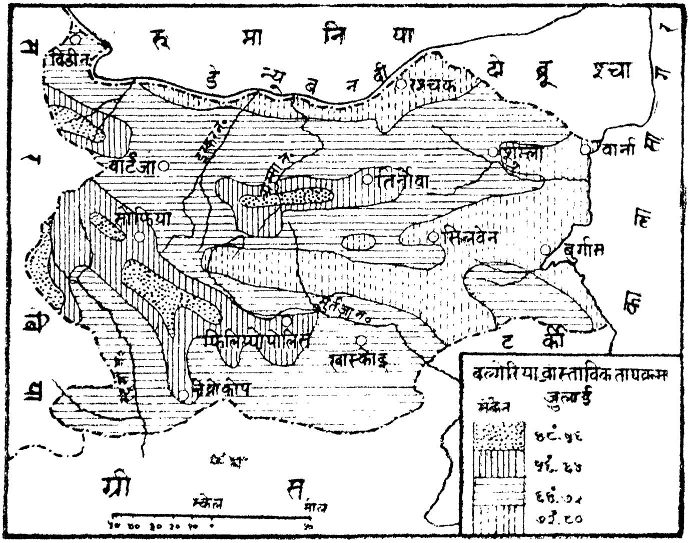


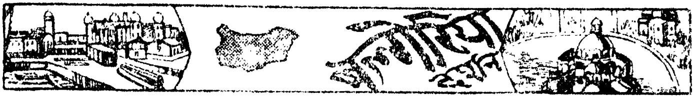
रूमानिया
डेन्यूब नदी
दोब्रूश्चा
विडीन
रुश्चक
शुम्ला
वार्ना
वार्टजा
तिर्नोवा
सोफिया
सिलवेन
बुर्गास
फिलिप्पोपोलिस
नेवरोकोप
टर्की
ग्रीस
काला सागर
बल्गेरिया - प्राकृतिक
३००० फुट से ऊपर
१२०० से ३००० फुट
६०० से १२०० फुट
० से ६०० फुट
स्केल
मील



रूमानिया
डेन्यूब नदी
दोब्रूश्चा
विडीन
रुश्चक
शुम्ला
वार्ना
वार्टजा
तिर्नोवा
सोफिया
सिलवेन
बुर्गास
फिलिप्पोपोलिस
नेवरोकोप
टर्की
ग्रीस
काला सागर
२९.९"
१०१२ ५ मिलीबार
बल्गेरिया जलवायु (ग्रीष्मकाल)
१ मई से ३१ अक्तूबर तक
संकेत
समभार रेखा
प्रचलित हवायें
५-१०"
१०-२०"
स्केल
मील


बलगेरिया
(शीत काल की वर्षा)
१ नवम्बर से ३० अप्रैल तक
स्केल
मील


बल्गेरिया वास्तविक तापक्रम
जुलाई
संकेत
स्केल
मील



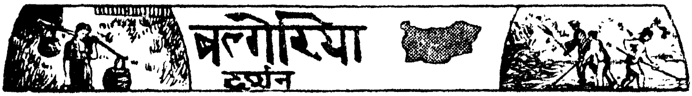
बेसिन बन गये हैं नदी गायब हो गई है। अधिक पश्चिम के बेसिनों का पानी टोपोल्लिटसा और स्ट्रीमा नदियों द्वारा मरीट्सा नदी में जा गिरता है। पूर्व की ओर के बेसिनों का पानी तुञ्जा और उसकी सहायक नदियों द्वारा जाता है। एड्रियानोपुल के समीप तुञ्जा नदी मुर्तज़ा नदी में जा गिरती है। स्लीको का बेसिन इस प्रान्त के सब से पूर्वी भाग में है।

ज्लाटिट्सा का बेसिन सबसे पश्चिम की ओर है। इस बेसिन में इसी नाम का (ज़्लाटिट्सा) नगर बसा है। यह बेसिन अपने फल के लिये प्रसिद्ध है। कारलोवो बेसिन में स्ट्रीमा नदी बहती है और वहां पर गुलाब तथा अंगूर स्वतंत्रता पूर्वक उगते हैं। कज़नलिक का बेसिन सबसे बड़ा तथा प्रसिद्ध है। इस बेसिन का जो भाग तुञ्जा नदी का है वह बड़ा ही मनोहर तथा उपजाऊ है। इस भाग में संसार के सबसे बड़े गुलाब के फूल की वाटिकाएँ हैं। वहां पर इत्र तथा सेंट तयार करने का रोज़गार होता है। इस ओर सेंट तयार करने वाले स्थानों में स्तरा जगोरा नगर सब से अधिक प्रसिद्ध है। आजकल वहां पर ईख और आलू की उपज भी होने लगी है।

देश दर्शन

रोडोप पर्वत से मुर्तज़ा नदी निकलती है। रोडोप पर्वत से निकलने वाली नदियों में लकड़ी बहाई जाती है। मुर्तज़ा नदो में जो नदियां बायें तट में जाकर मिलती हैं वह कछार बनाती हैं। नदियों के किनारे चावल की उपज की जाती है। नदियों से दूर वाली भूमि में मत्का, गेहूँ और तम्बाकू की उपज की जाती है। पर्वतों के ऊपर अंगूर आदि के फलों के वृक्ष उगाये जाते हैं। वहां पर कुछ कपास भी पैदा की जाती है। फिलिप्पोपोलिस और तारतार बज़ारजिक आदि वहां के प्रसिद्ध नगर हैं।

अधिक पूर्व में उत्तर से दक्षिण का मैदान घास का है वहां की जलवायु सूखी है। इस प्रदेश की मुख्य उपज गेहूँ है। अधिक दक्षिण की ओर स्ट्राञ्जा पहाड़ियां हैं जो काला सागर तक फैली हुई हैं। यह पहाड़ियां वनों से ढकी हुई हैं। मुर्तज़ा बेसिन की भूमि कछारी होने के कारण बड़ी उपजाऊ है।



४—रोडोप का ऊँचा प्रदेश

यह प्रदेश बल्कान श्रेणियों वाले प्रदेश से बिलकुल भिन्न है। इस ऊँचे बेसिन के ऊपर सोफिया नगर बसा है। नगर से पूर्व तथा पश्चिम दोनों ओर मार्ग जाते हैं। यह मार्ग बहुत प्राचीन हैं। इस प्रदेश के प्रधान व्यापारी यहूदी हैं। इसी कारण किसानों का देश अधिक उन्नतिशील नहीं हो रहा है। सोफिया के नागरिक लोग सत्य जीवन में घटित होने वाली राजनीति को मानते हैं। इसी कारण बल्गेरिया के राजनैतिक इतिहास में इतनी गड़बड़ी पड़ी हुई है और मेसेडोनिया प्रान्त में बल्गेरिया के इतिहास ने इतना बड़ा भाग लिया है।

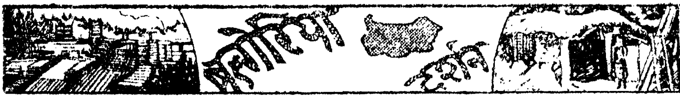
पश्चिमी पर्वतीय पेटी

बल्गेरिया के दक्षिणी-पश्चिमी पर्वतीय प्रदेश के लिये साधारण रूप से रोडेपे शब्द का प्रयोग किया जाता है। स्टारा प्लानिया से दक्षिण की ओर का प्रदेश टूटी पर्वतीय श्रेणियों का बना है। इस भाग में होकर बल्गेरिया और यूगोस्लाविया की सीमा जाती है। इसके दक्षिणी भाग का नाम ओसोगोव्स्का प्लानिया

है। यह प्रदेश स्ट्रूमा नदी द्वारा पूर्व की ओर अधिक ऊँचे पहाड़ी भाग से अलग है। स्ट्रूमा नदी सोफिया नगर के दक्षिण-पश्चिम ६५०० फुट ऊँची एक पहाड़ी से निकलती है और बल्गेरिया की सीमा छोड़ कर यूनान के मैसेडोनिया प्रान्त में बहती हुई एजियन सागर में गिरती है। इस नदी की घाटी के पूर्व पर्वतीय भूमि की एक लम्बी पट्टी है जिसकी सबसे अधिक ऊँचाई ९६०० फुट है। यह पट्टी दक्षिण की ओर पिरीन बाग तक और दक्षिण-पूर्व रोडोपे प्लानिया तक जाती है। इस्कर नदी जो सोसिवा के बेसिन होकर बहती है रीला पर्वतों से निकलती है। विस्टोशा पर्वतीय श्रेणी सोफिया से स्ट्रूमा की घाटी वाले मार्ग के मध्य में पड़ती है।

स्ट्रूमा नदी दो कारणों से अधिक प्रसिद्ध है। एक तो यह कि यह नदी और सहायक नदियां जिन बेसिनों में होकर बहती हैं वह अपने समीपवर्ती पर्वतीय प्रदेशों से अधिक उपजाऊ हैं। दूसरे इन नदियों की घाटियों से बल्कान प्रायद्वीप तथा एजियन सागर को मार्ग जाते हैं। यह मार्ग सोफिया नगर से मिले हुये हैं।

इस प्रान्त का सब से अधिक ऊँचा बेसिन पिरेनिक



(लगभग २५० फुट) का है। इस बेसिन में अच्छा भूरा कोयला पाया जाता है। कुस्टेण्डिल का बेसिन १६०० फुट ऊँचा है। यह बड़ा उपजाऊ है और अंगूर तम्बाकू, बैर की उपज होती है। यहाँ स्नान करने के गंधक के गरम सोते हैं। ओसोगोव्स्का पर्वत के ढालों से एक प्रसिद्ध मार्ग यूगोस्लाविया में उस्कुब को जाता है। स्ट्रूमिटसा के दाहिने किनारे से जो सहायक नदी पश्चिम से पूर्व को बहती है उसकी घाटी बड़ी उपजाऊ है। इस घाटी का केवल थोड़ा सा भाग १६१६ ई० की संधि के अनुसार बल्गेरिया में पड़ता है। गत महा-युद्ध के समय इस घाटी में भीषण युद्ध हुआ था। इस घाटी में प्रवेश करने के लिये सुगम मार्ग है।

रोडोप और रीला की पर्वतीय श्रेणियां सख्त चट्टानों की बनी हैं। यह श्रेणियां बहुत प्राचीन हिम कालीन समय की हैं। इनमें ऊँचाई पर अधिक बन हैं। रोडेपे प्रान्त में पोमक्स लोग रहते हैं जो बल्गेरिया के मुसल-मान हैं। यह लोग लकड़ी काटने तथा चारकोल जलाने का काम करते हैं। ब्लाच लोग गल्ले बानी का काम करते हैं। इस प्रान्त में रीला का मठ ३६०० फुट की

ऊँचाई पर बना हुआ है। इस मठ की उत्पत्ति बहुत प्राचीन है यद्यपि वर्तमान मठ आधुनिक काल का बना हुआ है।

बल्गेरिया का यह प्रदेश उसकी रक्षा का काम कर सकता है। इस प्रदेश में लोग छिप कर अपने प्राणों की रक्षा कर सकते हैं और शत्रु के विरुद्ध विप्लव खड़ा कर सकते हैं। इस प्रान्त में होकर ठीक सीमा का नियत करना कठिन है इसी कारण सर्ब और बल्गेरियन जाति में जाति सम्बन्धी भिन्नता पाई जाती है जो उसके मध्य समय समय पर झगड़े उत्पन्न करने का कारण बन जाती है।

संक्षिप्त इतिहास

प्राचीन काल में डैन्यूब नदी और एजियन सागर के मध्य थ्रैको-इलीरियन जाति बसी थी। तीसरी और सातवीं सदी के मध्य वहाँ पर स्लाव जाति जाकर बसी और उसने थ्रैको इलीरियन जाति को वहाँ से निकाल बाहर किया। स्लाव जाति पर रोमन सभ्यता का प्रभाव पड़ा।

बल्गर अथवा ट्यूरेनियन जाति हुन जाति से मिलती जुलती थी, वह हुन जाति के पश्चात् पश्चिम की ओर गई। बल्गर जाति के लोग जंगली घुड़सवार थे। वह भयानक असभ्य थे। उनके शासक खान और सरदार हुआ करते थे। उनके धर्म के सम्बन्ध में अधिक पता नहीं है। स्त्रियां घूंघट अपने सिर पर लगाती थीं और मर्द लोग सिर पर साफा बांधते थे। उनका मुख्य भोजन मांस था। वह युद्ध में ही अपना जीवन व्यतीत करते थे। चौथी सदी में बल्गर लोग यूराल और वाल्गा नदी के मध्यवर्ती घास के मैदानों तक पहुँच गये थे। ४३३ ई० में उनका संघ टूट गया और यूतीगोरी तथा कुतरीगूरी दो भाग हो गये। कुतरीगूरी लोगों ने काला सागर के उत्तरी तट पर एक मज़बूत राज्य स्थापित किया और

बहुत समय तक वह पूर्वी रोमन राज्य के लिये भय का कारण बने रहे। ५६० ई० में अवर्स जाति ने कुतरीगूरी जाति का नाश कर दिया। यूतरीगूरी जाति ने ५८२ ई० में वाल्गा नदी पर अपना राज्य स्थापित किया। उसी जाति के बचे हुये लोग तेरहवीं सदी में बड़े बल्गरी के नाम से प्रसिद्ध हुये। यूतीगूरी जाति वालोनेस्पेरिच सर्दार की अध्यक्षता में ६७६ ई० में डैन्यूब नदी को पार किया और स्लावोनिक जाति पर अधिकार जमाते हुये कुस्तुन्तुनिया तथा स्लोनीका के द्वार पर पहुँचे। पूर्वी रोमन राजा ने उन्हें सालाना कर दिया और मोयसिया का प्रान्त भी दिया। उसके बाद बल्गर जाति स्लावोनिका जाति में घुल मिल कर समाप्त हो गई।

आदि बल्गेरियन राज्य की स्थापना डैन्यूब नदी के दोनों तटों पर हुई थी जिसमे खान कुरूम, ओमोर ताग, कार्दम, बोरिस आदि सरदार हुये।

प्रथम साम्राज्य

सीमियन (८९३-९२७) के समय में बल्गर राष्ट्र अपनी शिखा पर पहुँच गया था। सीमियन राज कला कौशल, युद्ध और शान्ति में निपुण था। उस समय



बल्गेरिया की गणना संसार के सभ्य देशों में होती थी। उसने अपने राज्य की सीमा एड्रियाटिक सागर तक बढ़ा लिया था और सर्ब जाति पर भी अधिकार कर लिया था। उसने पूर्वी योरुप में महाराजाधिराज की पदवी को स्वीकार किया था। उसकी राजधानी प्रेस्लाव थी। प्रेस्लाव नगर कुस्तुन्तुनिया की भांति ही सुन्दर तथा विशाल नगर था।

पश्चिमी बल्गेरियन राज्य

सीमियन की मृत्यु के पश्चात् बल्गर लोगों की शक्ति क्षीण हो गई। ९३१ ई० में सर्बिया ने अपनी स्वतंत्रता फिर प्राप्त कर लिया और मैसेडोनिया का प्रांत भी स्वतंत्र हो गया। समूएल (९८०-१०१४) राजा ने सर्बिया को फिर विजय किया और उत्तरी बल्गेरिया को विजय करके नया बल्गेरियन साम्राज्य स्थापित किया। उसके बाद १०१८-११२६ ई० तक बल्गेरियन राज्य के प्रान्त बेज़ेनटाइन राजों के अधिकार में रहे।

द्वितीय साम्राज्य

१८८५ ई० में उत्तरी बल्गेरिया ने अपनी स्वतंत्रता

प्राप्त किया और इवान असेन बल्गर तथा यूनानी जाति के राजा बनने की पदवी ग्रहण किया और ज़ार कहलाने लगा। असेस लोग अपने को प्राचीन बल्गर राज्य घराने से बतलाते थे परन्तु वह सत्य रूप में व्लाच वंश में से थे। कालोयान या जॉनिट्सा तीसरे असेन राजा ने अपने राज्य को बेल्ग्रेड, नीश और स्कोप्लजे तक बढ़ाया। पोप ने भी उसे ईसाई राजाओं में सबसे बड़ा स्वीकार किया था।

इवान असेन द्वितीय (१२१८-४१) बल्गेरियन राजाओं में सबसे बड़ा था। उसने अल्बानिया, एपिरस, मेसेडोनिया, थ्रेस आदि देशों पर अधिकार जमा लिया था और राज्य का शासन न्याय, चतुरता और नर्मी के साथ करता था। उसके समय में राष्ट्र ने व्यापार, विद्या और कला कौशल में अच्छी उन्नति किया था। उसकी राजधानी ट्रोनोवो नगर में थी। राजधानी के अन्दर बड़े बड़े विशाल गिरजाघर तथा मठ बने हुये थे। उस काल में बल्गेरिया की सभ्यता योरुप के देशों के समान ही थी। १२०० ई० में बल्गेरिया के असेन्स राज्य घराने का अंत हो गया। १२९२-९५ ई० तक उत्तरी बल्गेरिया पर

मंगोल लोगों का अधिकार रहा। १३३० ई० के पश्चात् बल्गेरिया सर्ब जाति के अधिकार में चला गया।

१३४० ई० में मुर्तज़ा की घाटी पर तुर्क आक्रमण होने लगा। १३६२ ई० में उन्होंने फिलिप्पोपोलिस पर अधिकार किया। १३८२ ई० में उनका सोफिया नगर पर अधिकार हुआ। ट्रनोवो पर १३९३ ई० में तुर्कों ने आक्रमण करके विजय किया और नगर को जला दिया। १३९६ ई० में विडीन पर तुर्कों का अधिकार हुआ और इस प्रकार बल्गेरियन स्वतंत्रता का अंत हो गया।

बल्गेरिया के इतिहास का श्याम काल १३९६ ई० से १८७८ ई० तक माना जाता है। इस काल में बल्गेरिया पर तुर्कों का शासन रहा। तुर्कों ने तलवार अग्नि के द्वारा समस्त राज्य का सत्यानाश कर दिया था। मैदानों के निवासियों ने अपने स्थान छोड़ छोड़ कर पर्वतों पर जा अपनी नई बस्तियाँ बसाईं। बहुत से बल्गर सरदारों ने मुसलमान धर्म स्वीकार कर लिया। कितने ही लोग डेन्यूब नदी के पार जा टिके। बोगूमिल लोगों ने इस्लाम धर्म स्वीकार कर लिया। उत्तर तथा दक्षिण के मैदानों में तुर्की बस्तियां बस गईं। बल्गेरिया

के थ्रेस और मेसेडोनिया आदि प्रान्तों में तुर्क गवर्नरों का राज्य हो गया। बल्गेरिया देश को सोफिया, निकोपोलिस, विडिन, सिलिस्ट्रिया और क्यूस्टेण्डिल आदि भागों में बाँट दिया गया। ज़मींदारी प्रथा द्वारा बल्गेरिया का शासन चलने लगा। ईसाइयों के ऊपर कृषि पर नया कर लगाया गया। उन पर ईसाई होने के लिये भी कर लगाया गया था। व्यापारी खान खोदने वाले और लड़ाकू लोगों पर किसी प्रकार का कर नहीं लगाया गया था। वह अपने स्थानीय स्थानों में स्वतंत्रता से रहते थे। जब तक ओटोमन शक्ति का झंडा फहराता रहा प्रजा की दशा साधारण रूप से अच्छी रही। उनके अधिकारों का सनमान होता था, अच्छी अच्छी सड़कें देश के भीतर बनाई गई थीं और कारवां एक स्थान से दूसरे स्थान पर आया जाया करते थे।

बलाचिया प्रान्त में १५९५ ई० में दूसरा बलवा हुआ। उसके बाद १६८८ ई० में दूसरा बलवा हुआ। यह बलवा आस्ट्रियन सेना की सहायता से हुआ था। १७३९ ई० में बेलग्रेड की संधि के पश्चात् आस्ट्रिया बल्कान नीति से अलग हो गया। उसके बाद रूस ने

अपने हाथ बढ़ाये। १६८७ ई० में रूस ने अपने को बल्कान के सनातनी ईसाइयों का संरक्षक बनाया था। रूस की यह राजनीति थी। रूस ने अपना यह अधिकार कुचुक कैनार्जी (१७७४) की संधि के अनुसार प्राप्त किया था। १६८३ ई० में तुर्की सुल्तान को वियना के घेरे में असफलता मिली। उसके बाद उसकी शक्ति क्षीण होने लगी और बल्कान के अन्दर अराजकता फैल गई। अठारहवीं सदी में जब तुर्क तथा आस्ट्रिया में युद्ध हुआ तो तुर्की सेना ने बल्गेरिया को सत्यानाश कर दिया। उसके बाद तुर्की सेना के लोगों ने देश का और भी सत्यानाश किया जब कि वह तुर्की सिक्का जमाने के लिये इधर उधर घूमते फिरते थे। १७६४ ई० में पस्वानोग्लू नामक सैनिक सर्दार ने विडीन में स्वतंत्र राज्य स्थापित किया। उसने विडीन नगर में विशाल भवन बनवाये, शान्ति स्थापित किया, कर लगाया और अपना अलग सिक्का चलाया।

राष्ट्रीयता की जागृति

उन्नीसवीं सदी के आरम्भ काल में बल्गर जाति लगभग लुप्त सी हो गई थी परन्तु भाषा ने उसके

भीतर देशभक्ति तथा राष्ट्रीयता की जागृति उनके भीतर भर दी। भाषा द्वारा जागृति उत्पन्न करने वाले लोगों में सबसे पहला व्यक्ति पैसाई नामक अथास पर्वत का साधु था। उसने बल्गेरिया के राजों और साधुओं के नाम पुस्तकें लिखीं।

१८२४ ई० के पश्चात् वर्तमान बल्गेरियन भाषा में कई पुस्तकें लिखी गईं और १८३५ ई० में प्रथम बल्गेरियन स्कूल गाबरोओ में स्थापित किया गया। १० साल के भीतर ही ५० बल्गर स्कूल तथा ५ बल्गर छापे खाने स्थापित हो गये। ममरसेव, स्कास्को पनायोत, खितोव हाजी दिमित्र और स्टेफेन कराजा आदि बल्गर देश-भक्तों ने अपने अधिकार प्राप्त करने के लिये भीषण प्रयत्न किया। १८७० ई० में उन्हें कुछ अधिकार रूस की सहायता से प्राप्त हुये उसके बाद बल्गेरिया में राष्ट्रीयता के भाव की बृद्धि दिन प्रति दिन बढ़ने लगी।

१८७६ ई० का बलवा

१८७५ ई० में बोसनिया और हर्जगोवोना प्रान्त में बलवा हुआ उसके पश्चात् १८७६ ई० में समस्त बल्गेरिया



में बलवा करने का संगठन किया गया परन्तु वह शीघ्र ही दबा दिया गया। १५ हज़ार बल्गर लोग फिलिप्पोपोलिस के समीप कतल किये गये। जिन लोगों की हत्या की गई थी उसमें स्त्रियां तथा बच्चे सभी थे। ५८ गांव तथा बल्गर मठ नष्ट कर दिये गये। बल्कान के उत्तर में जो बिद्रोह हुये वह भी इसी प्रकार शान्त कर दिये गये ग्लैडस्टन ने इन सब सख्तियों का विरोध किया जिसके कारण समस्त योरुप नाराज़ हो गया। तुर्कों पर सर्बिया ने युद्ध घोषणा किया जिसमें २००० बल्गार स्वयंसेवक भी सम्मिलित थे। उसी साल के अन्त में कुस्तुन्तुनिया में जब सभा हुई तो उसमें राष्ट्रों ने सुधार करने के लिये प्रस्ताव रक्खे परन्तु पार्टे ने उन्हें ठुकरा दिया। अप्रैल १८७७ ई० में रूस ने टर्की पर युद्ध घोषणा कर दिया। रूसी आक्रमण में बल्गर जाति के स्वयंसेवकों ने अच्छा भाग लिया था।

स्वतंत्र बल्गेरिया

(सैन स्टिफैनो तथा बर्लिन की संधि) चटाल्जा तक बढ़ने के बाद रूस ने ३ मार्च १८७६ ई० को सैन स्टिफैनो की संधि लिखवाया जिससे बल्गर लोगों की

लगभग सभी मांगें मिल गईं। एक स्वतंत्र प्रान्त की स्थापना की गई जिसकी पश्चिमी सीमा तिमोक नदी से परोत, बराञ्जे, स्कोप्ली देबार, ओखरीदा और कस्तोरिया नगरों में होकर जाती थी। स्लोनीका और चाल्सोडाइस नगर टर्की के अधिकार में रहे। डोबरूजा रूमानिया को दिया गया क्यों कि रूस ने बेसारबिया प्रान्त पर अधिकार कर लिया था। नये बल्गेरिया राज्य में बाल्कान प्रायद्वीप का ३/५ भाग शामिल किया गया जिसकी जन संख्या ४० लाख थी। इस पर योरुप के राज्यों को भय उत्पन्न हुआ कि बल्गेरिया का राज्य बढ़ जाने के कारण रूस की शक्ति अधिक बढ़ जावेगी क्योंकि बल्गेरिया रूस की संरक्षता में था। १३ जुलाई १३७८ ई० को बर्लिन की संधि हुई जिसमें बलगेरिया का राज्य छोटा कर दिया गया और वह पोर्ट की संरक्षता में स्वतंत्र बनाया गया। डेनूब नदी की मध्य की भूमि (डोबरूजा छोड़कर) बलकान प्रदेश, सलोकोव और क्यूस्टेण्डिल आदि बलगेरिया राज्य में शामिल किये गये। बराञ्जे पिरोत और नीश सर्बिया को दिये गये। टर्की के पास लगभग समस्त मसेडोनिया प्रान्त रहा। बलकान और

रोडोपेस के मध्य पूर्वी रूमेलिया का प्रान्त स्थापित किया गया। यह प्रान्त स्वतंत्र होकर टर्की सुल्तान के अधिकार में रहने को था। वहाँ पर ईसाई गवर्नर जनरल को रखने के लिये तय किया गया। रूमेलिया में एक कानून वाली सभा बनाई गई तथा एक सेना भी रक्खी गई।

बल्गेरिया के विधान बनाने के लिये प्रधान व्यक्तियों की एक सभा ट्रनोवो नगर में होने को थी। यह सभा ९ महीने के अन्दर ही अपनी बैठक करने को थी। वहां पर बल्गेरिया के लिये कानून बनाने को थे और राजा चुना जाने को था। पोर्ट द्वारा ही राजा तथा सभा का चुनाव होने को था। जब तक बल्गेरिया का विधान नहीं बना तब तक वहाँ पर रूसी सेना का अधिकार रहा और रूसी अफसर शासन करते रहे।

ट्रनोवो का विधान तथा अलिक्जराडर राजा का चुनाव

लोकमत द्वारा निर्वाचित धारा सभा जिसकी बैठक २२ फरवरी १८७८ ई० को ट्रनोवो में हुई वह बड़ी ही प्रजातन्त्रवादी थी। उसके अधिकांश सदस्य किसान तथा

नर्म दल के लोग थे। जो विधान इस धारा सभा ने बनाया वह योरुप में बड़ा ही प्रजातांत्रिक था।

२९ अगस्त १८७९ ई० को बल्गेरिया की धारा सभा ने बल्गेरिया की गद्दी के लिये बैटेनवर्ग के राजकुमार को चुना। वह हेस घराने का था और रूस के राजा अलिक्जण्डर द्वितीय का भतीजा था। वह विदेशी होने के कारण बलगेरिया की अधिक चिंता नहीं करता था। इस लिये नर्म दल से उससे शीघ्र ही लड़ाई हो गई। राजा ने पहले सनातनी धर्म की सरकार बनाया परन्तु फिर मजबूर होकर उसने नर्म दल की सरकार बनाया। सानकोप नर्म दल की सरकार का प्रधान बनाया गया। उसके बाद राजा तथा सरकार में कई बार झगड़ा हुआ और आखिरकार ९ जुलाई १८८४ ई० को नर्म दल के बाम पक्ष वालों की सरकार स्थापित हुई।

पूर्वी रूमेलिया के साथ मिलन तथा सर्बिया के साथ युद्ध

१८ सितम्बर १८८५ ई० को बलगेरियन-पूर्वी रूमेलिया संघ की घोषणा हुई। १४ नवम्बर १८८५ ई०



को सर्बिया के राजा मिलान ने युद्ध घोषणा किया परन्तु बुखारेस्ट की संधि में अलिक्ज़ण्डर पूर्वी रूमेलिया का गवर्नर जनरल स्वीकार कर लिया गया।

७ जुलाई १८८७ ई० को राजा फर्डिनेण्ड का चुनाव बलगेरिया की गद्दी के लिये हुआ। मैसेडोनिया प्रान्त का प्रश्न बड़ा जटिल था। बर्लिन की संधि के अनुसार रूमानिया, सर्विया और टर्की के बलगर लोग अधिकार में थे। मेसेडोनिया प्रान्त में बलगर लोगों की संख्या अधिक थी वहां से विदेशी मालिकों का हटाना सरल था। १६०१ ई० में मेसेडोनिया में विद्रोह हुआ जिससे टर्की और बलगेरिया के मध्य झगड़ा होते होते बचा। युद्ध के भय के कारण बलगेरिया को एक सेना रखनी पड़ी। मेसेडोनिया से लोग आ जाकर बलगेरिया में बस रहे थे जिससे वहां धन की और भी अधिक कमी हो रही थी। मैसेडोनिया प्रान्त पर सर्ब, यूनानी, अस्त्रानी, व्लाच आदि सभी लोग अपना अपना अधिकार जमाना चाहते थे। इसलिये यह लोग वहाँ पर सशस्त्र आन्दोलन का प्रचार कर रहे थे। १६०६ ई० में यूनानी लोगों ने जो विद्रोह मेसेडोनिया में किया उसके कारण यूनानियों

पर सख्ती की गई। रूस में सर्विया का अधिक मान था इसी कारण मेसेडोनिया में सर्ब लोगों का प्रचार भी अधिक था। अपने देश को स्वतंत्र बनाने के लिये राजा फर्डिनेण्ड ने बल्गेरियन स्वतंत्रता की घोषणा किया। फरवरी १६०८ ई० में फर्डिनेन्ड राजा ने वियना का भ्रमण किया। वियना में उसका अच्छा स्वागत किया गया। जुलाई १६०८ ई० की क्रांति के पश्चात् फ़र्डिनेन्ड और महाराजाधिराज फ्रांसिस जोजफ़ के बीच संधि हो गई। जब बोसनिया और हर्ज़ेगोविना प्रान्त को आस्ट्रिया में मिला लिया तो ५ अक्टूबर १६०८ ई० को फर्डिनेन्ड ने बलगेरिया के स्वतंत्र होने की घोषणा किया। १६ मार्च को रूसो-तुर्की संधि हुई और राष्ट्रों ने बलगेरिया की स्वतंत्रता स्वीकार किया। प्रथम बालकन युद्ध टर्की और बलगेरिया, सर्बिया और यूनान के साथ हुआ। लन्दन की दूसरी सभा में सदस्यों ने संधिनामे पर अपने हस्ताक्षर किये। टर्की ने योरुप की अपनी समस्त भूमि सौंप दिया। अल्बानिया को स्वतंत्रता प्रदान की गई।

संधि की धाराओं के भिन्न भिन्न अर्थ लगाने के

कारण ही द्वितीय बालकन युद्ध हुआ। सर्ब लोग संधि को फिर से नया करना चाहते थे। सर्ब और यूनानी लोग अपनी विजय के कारण मेसेडोनिया में जिस भूमि पर अधिकार किये हुये थे। वह भूमि पहले बलगेरिया के अधिकार में थी। १९१३ ई० के आरम्भ में बलगेरिया ने शंका करनी आरम्भ कर दी कि उसके मित्र राष्ट्र उसके विरुद्ध संगठित हो रहे हैं। इसलिये बलगेरिया का सैनिक दल राजा की अध्यक्षता में युद्ध करने के लिये तयार हुआ। १ जून को स्लोर्नीका में यूनान और सर्बिया के मध्य संधि हुई। द्वितीय बाल्कन युद्ध के कारण बलगेरिया और मैसेडोनिया दोनों पर कष्ट आ गया। बुखारेस्ट की संधि के अनुसार रूमानिया को डोबरुजा के उपजाऊ प्रान्त मिले थे। यह १८७७ ई० से बलगेरिया के अधिकार में थे। सर्बिया और यूनान ने मैसेडोनिया प्रान्त को अपने बीच बांट लिया। बलगेरिया को पहाड़ी प्रदेश, डोस्पत एजियन सागरी प्रान्त और देदेगाच तथा लागोस के बन्दरगाह मिले।

जुलाई १९१३ ई० में राडो स्लावोव सरकार ने रूसो-मित्र नीति को छोड़ दिया और जब उसे फ्रांस,

ब्रिटेन और रूस से ऋण मिलने की आशा न रही तो उसने अपना रुख जुलाई १९१४ ई० में मध्य योरुप के राष्ट्रों की ओर फेरा और उनसे ५० करोड़ रुपया कर्ज लिया। इसके बदले में मध्य योरुप के राष्ट्रों को बलगेरिया की कोयले की खानों, लाघोस बन्दरगाह तथा वहां तक जाने वाली रेलवे लाइन पर अधिकार प्राप्त हुआ। जब गत महायुद्ध की घोषणा हुई तो बलगेरियन लोग तटस्थ रहना चाहते थे परन्तु वहाँ का राजा जर्मनी के साथ सहमत था। वह जर्मनी का साथ देकर मेसेडोनिया प्रान्त को अपनाना चाहता था। १९१५ ई० में यह प्रयत्न किया गया कि बलगेरिया को जर्मनी से अलग कर लिया जावे परन्तु यूनान तथा सर्बिया अपने स्थान छोड़ने पर तयार न थे इस कारण यह न हो सका। ६ सितम्बर को प्लेस स्थान पर बलगेरिया ने मध्य राष्ट्रों के साथ सैनिक संधि किया, टर्की ने भी बलगेरिया को अपने यहां कुछ सुविधायें स्वीकार किया। १२ अक्टूबर को बलगेरिया ने सर्बिया के ऊपर युद्ध घोषणा किया। उसके पश्चात् १५, १६ और १७ अक्टूबर को ग्रेट ब्रिटेन, फ्रांस और इटली ने बलगेरिया पर क्रमशः युद्ध घोषणा कर दिया।

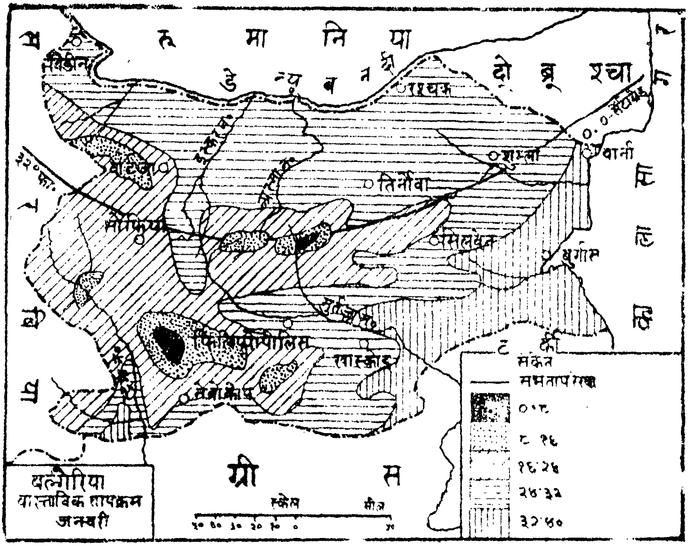


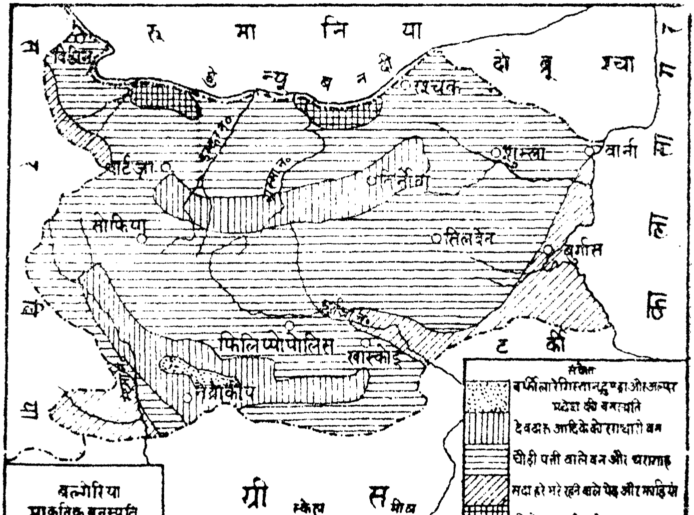
पहले बलगेरियन सेना को मेसेडोनिया और डोब्रूजा में कुछ विजय हुई परन्तु आखिरकार उसकी हार हुई और उसने क्षणिक संधि याचना किया। राजा फर्डिनेन्ड ने अपने पुत्र बोरिस के प्रति बलगेरिया की गद्दी छोड़ दिया। नेविली की संधि के अनुसार बलगेरिया को निःशस्त्र कर दिया गया। उस पर युद्ध का हर्जाना लगाया गया। दक्षिणी डोब्रूजा प्रान्त रूमानिया को, कैरीब्राड और स्ट्रमीका यूगोस्लाविया को, मेसेडोनिया में जो कुछ बलगेरिया ने जीता था वह यूनान को दिया गया। एजियन सागर का तट मित्र-राष्ट्रों को मिला, बाद को सैनरेमो की संधि के अनुसार एजियन सागर का तट यूनान को दे दिया गया।

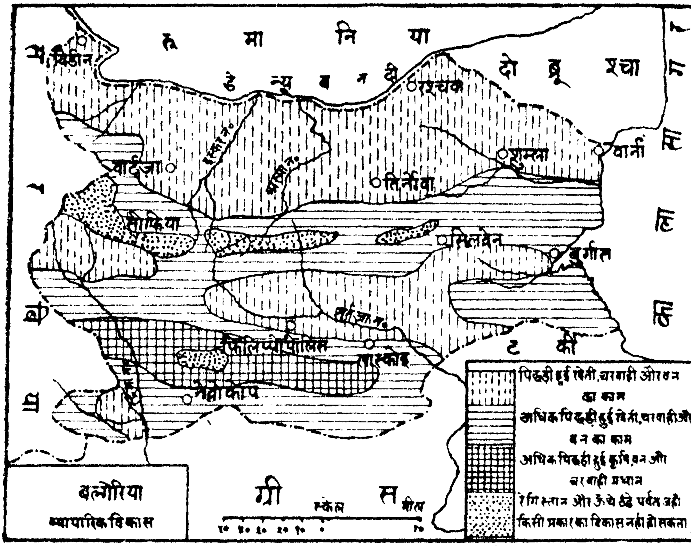
२८ मार्च १९२० ई० के निर्वाचन में स्टैम्बुलस्की के दल की विजय हुई और वह प्रधान मंत्री बनाया गया। ९ जून १९२३ ई० को सैनिक क्रांति हुई। स्टेम्बोल्सकी मार डाला गया और उसके अधिकांश मन्त्री जेल में डाल दिये गये। उसके बाद प्रोफेसर सानकोव ने डेमाक्रेटिव इनटेंटे नामक दल बनाया और वह प्रधान मन्त्री बना। बलगेरिया के अन्दर क्रान्ति की लहर चलती रही परन्तु सानकोव ने उसे दबा दिया। कई हजार विप्लवकारी मार

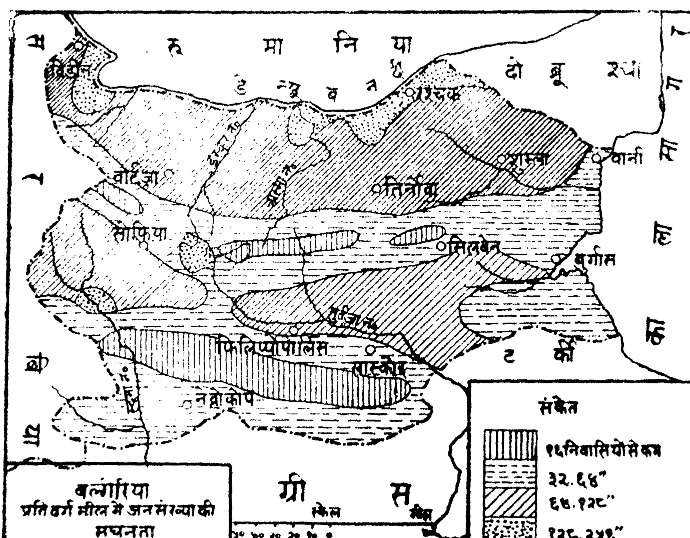
डाले गये और बहुतों को अधिक समय के लिये जेल में डाल दिया गया। १९२५ ई० में बोरिस राजा को मारने के लिये उपाय किया गया और दूसरे ही दिन जनरल घेओरघीब मार डाला गया। जब सोफिया में उसका अन्तिम संस्कार हो रहा था तो वहां पर बम फटा और १२३ आदमी मर गये और ३२३ व्यक्ति घायल हुये। राजदूतों की सभा द्वारा बलगेरिया को १० हजार तक सेना बढ़ाने की आज्ञा दी गई जिसकी सहायता से उसने अपने देश के बलवे को दबा दिया। ४ फरवरी १९२६ ई० को बलगेरिया में सरकार की ओर से जाने की घोषणा की गई। बलगेरिया में उस समय कुल ६३२५ राजनैतिक अपराधी थे। बलगेरिया के अन्दर अगरेरियन दल बनाने की आज्ञा प्रदान कर दी गई। राष्ट्र संघ के निर्णय करने पर इङ्गलैंड के बैंक ने ६० लाख रुपये का ऋण बलगेरिया को दिया जिससे वह भागे हुये राजनैतिक अपराधियों का प्रबन्ध कर सके। उसके बाद बलगेरिया ने अपने समीपवर्ती राष्ट्रों से मित्रता कर लिया।

वर्तमान समय में बलगेरिया पर धुरी राष्ट्रों का प्रभुत्व जम गया है। वहां होकर उनकी सेनायें आ जा सकती हैं।


रूमानिया
डेन्यूब नदी
दोब्रूश्चा
रश्चक
शुम्ला
वार्ना
तिर्नोवा
सोफिया
बुर्गास
फिलिप्पोपोलिस
खास्कोई
टर्की
ग्रीस
संकेत
समताप रेखा
०-८
८-१६
१६-२४
२४-३२
३२-४०
बल्गेरिया
वास्तविक तापक्रम
जनवरी
स्केल
मील


रूमानिया
डेन्यूब नदी
दोब्रूश्चा
रश्चक
शुम्ला
वार्ना
तिर्नोवा
सोफिया
बुर्गास
फिलिप्पोपोलिस
खास्कोई
टर्की
ग्रीस
संकेत
बर्फीला रेगिस्तान टुण्ड्रा और अल्पाइन प्रदेश की वनस्पति
देवदारु आदि के कोणधारी वन
चौड़ी पत्ती वाले वन और चरागाह
सदा हरे भरे रहने वाले पेड़ और झाड़ियां
शीतोष्ण प्रदेश के चरागाह
बल्गेरिया
प्राकृतिक वनस्पति
स्केल
मील


रूमानिया
डेन्यूब नदी
विडीन
रुश्चक
दोब्रूश्चा
वार्ना
शुम्ला
तिर्नोवा
वार्दिज़ा
सोफ़िया
सिलवेन
बुर्गास
फ़िलिप्पोपोलिस
हास्कोइ
नेव्रोकोप
काला सागर
सर्बिया
यूगोस्लाविया
टर्की
ग्रीस
स्केल
मील
पिछड़ी हुई खेती, चरागाही और वन का काम
अधिक पिछड़ी हुई खेती, चरागाही और वन का काम
अधिक पिछड़ी हुई कृषि, वन और चरागाही प्रधान
रेगिस्तान और ऊँचे ठंडे पर्वत जहाँ किसी प्रकार का विकास नहीं हो सकता
बल्गेरिया
व्यापारिक विकास


रूमानिया
डेन्यूब नदी
विडीन
रुश्चक
दोब्रूश्चा
वार्ना
शुम्ला
तिर्नोवा
वार्दिज़ा
सोफ़िया
सिलवेन
बुर्गास
फ़िलिप्पोपोलिस
हास्कोइ
नव्रोकोप
काला सागर
यूगोस्लाविया
टर्की
ग्रीस
स्केल
मील
संकेत
१६ निवासियों से कम
३२.६४"
६५.१२८"
१२८.२५६"
बल्गेरिया
प्रति वर्ग मील में जनसंख्या की सघनता



जलवायु

बल्गेरिया की जलवायु विषम है इसका मुख्य कारण वहां की पर्वतीय श्रेणियाँ हैं। गर्मी के दिनों में अत्यन्त जाड़ा पड़ता है। बल्कान से डैन्यूब तक के जिन प्रान्तों में तीखी उत्तरी वायु आती है वहां पर भीषण जाड़ा पड़ता है। नदी में अत्यन्त प्रबल गति होने पर भी बरफ से जम जाता है। वहाँ का ताप शून्य अंश से २४ अंश कम हो जाता है। बल्कान पर्वतों के कारण दक्षिण की ओर की गर्म हवा बल्गेरिया में प्रवेश नहीं कर पाती है इसी कारण गर्मी के दिनों में वहां इतनी अधिक गर्मी पड़ती है कि सहन न की जा सके। गर्मी के दिनों में सबसे अधिक ताप ६६ अंश होता है। सोफिया के ऊँचे पठार जाड़े के दिनों में बरफ से जमे रहते हैं। सोफिया का सबसे ऊँचा ताप ८६' और सबसे नीचा २' है। ग्रीष्म काल की रातें शीतल तथा सुहावनी होती हैं। पूर्व की ओर समुद्र के कारण जलवायु की विषमता कम हो जाती है और शीत या गर्मी अधिक नहीं पड़ती है। वर्ना बन्दरगाह पर कभी कभी समुद्र जम जाता है। समुद्री तट पर भीषण उत्तरी पूर्वी हवा

चलती है। काला सागर में तूफान आया करते हैं। पूर्वी रूमेलिया की जलवायु कुछ गर्म है और वहां बलगेरिया के दूसरे स्थानों से लगभग डेढ़ मास पहले बसंत ऋतु आरम्भ होती है। बलगेरिया में शीत काल छोटा परन्तु प्रबल होता है। वसंत ऋतु में वर्षा हो जाती है। ग्रीष्म काल में गरमी पड़ती है और तूफान आते हैं। पतझड़ काल बड़ा सुन्दर होता है और कभी कभी यह दिसम्बर मास तक चलता है।

बलगेरिया की जलवायु से (खासकर पर्वतीय स्थानों) मुर्तजा की घाटी, काला सागर के निचले स्थान और सोफिया के ऊँचे प्रदेशों में मलेरिया ज्वर अधिक आता है सबसे कम सालाना वर्षा २६ इंच है। गबरोवो की सालाना वर्षा ४२ इंच, सोफिया की २८ और वर्ना की १८ इंच है।



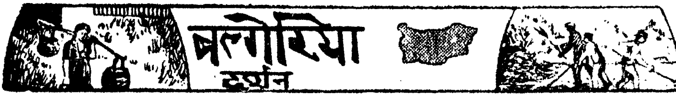
बनस्पति तथा जंगली पशु

बनस्पति के ध्यान से बलगेरिया देश पांच भागों में बांटा जा सकता है। १—उत्तरी मैदान जो बलकान से डैन्यूब तक ढालू है। २—बलकान और रोडोप के मध्य का दक्षिणी मैदान ३—काला सागर के समीपवर्ती प्रान्त, ४—साफिया, समकाव क्यूस टेण्डिल उँचले बेसिन ५—बलकान और दक्षिणी पर्वतीय श्रेणियों का अल्पाइन तथा उप अलपाइन प्रदेश।

प्रथम भाग की बनस्पति रूस और रूमानिया के घास के मैदानों से मिलती जुलती है। ग्रीष्म काल में वहां भांति भांति के पुष्प खिलते हैं। गर्मी के दिनों में लम्बी लम्बी घास उन्हीं के स्थान पर उग आती है बलकान के काला दक्षिण एशियाई कोचक की भांति की वनस्पति उगती है। सागरी तट पर रूमसागरी क्रीमिया तथा बनस्पति कार्पेकाकेशस प्रदेश की वनस्पति होती है। बलकान प्रान्त को थियन प्रान्त की वनस्पति से मिलती जुलती है। रीला और रोडोप प्रान्त में अधिक मूल्यवान वनस्पति मिलती है। बलगेरिया के बनों में अधिकतर ऐशएलम, अखरोट, बलूत, शफ्तालू, चिनार और

बदारु आदि के वृक्ष पाये जाते हैं। अधिक घने बन बलूत के वृक्षों के होते हैं। बलकान के ऊँचे प्रदेशों में शफ्तालू के बन पाये जाते हैं। बलकान के दक्षिणी भाग में बन कम हैं। पूर्वी रूमेलिया में अखरोट और शाहबलूत के बन अधिक हैं। बलकान के ऊँचे पर्वतों पर कोनोफर वृक्षों के बन हैं। जंगली फल, सेब, नाशपाती और बैर बहुत अधिक पाये जाते हैं। बलगेरिया में ११६४० वर्ग मील में बन पाये जाते हैं परन्तु इसका अधिकाँश भाग झाड़ियों से ढका हुआ है। रीला जिले के सुन्दर बनों का धीरे धीरे नाश हो रहा है।

बलगेरिया में रीछ, हिरन, पहाड़ी मृग, बन बिलाव, लोमड़ी, स्यार, भेड़िया साँप आदि जंगली पशु पाये जाते हैं। कहीं कहीं बनों में शेर भी मिलता है। पालतू पशुओं में दक्षिणी योरुप के सभी पशु पाये जाते हैं।



बल्गेरिया के मुख्य नगर

सोफिया नगर स्ट्रूमा नदी के तट पर बसा है। यह बल्गेरिया की राजधानी है। यहाँ से रेलवे लाइनें उत्तर-दक्षिण-पूर्व और पश्चिम चारों ओर को जाती हैं। इस नगर की जनसंख्या लगभग एक लाख है। फिलिप्पोपोलिस पूर्वी रूमेलिया की राजधानी है। यह एक बड़ा रेलवे स्टेशन है। इसकी जनसंख्या लगभग ६० हज़ार है। वार्ना नगर कालासागर के तट पर बसा है। यह बल्गेरिया का मुख्य बन्दरगाह है। यहाँ से समुद्री जहाजों द्वारा व्यापार होता है। विदेशी जहाज़ वहीं पर आकर ठहरते हैं। इसकी जनसंख्या लगभग ५० हज़ार है। रुस्तचुक नगर की जनसंख्या लगभग ३५ हज़ार है। स्लीवेन नगर की जनसंख्या ३० हज़ार, शुमला की २५ हज़ार, प्लेवना की लगभग २५ हज़ार है। स्तारा जगारो एक बड़ा रेलवे लाइन का जँकशन है। यहाँ की जनसंख्या लगभग २३ हज़ार है। तारतार पज़ार्जिक की लगभग १८ हज़ार है। विडीन नगर बल्गेरिया और रूमानिया की सीमा पर स्थित है। यह

रेलवे स्टेशन तथा डेन्यूब नदी का बन्दरगाह है। यहाँ की जनसंख्या लगभग १८ हज़ार है। मामशोली नगर की जनसंख्या १६ हज़ार है। यह एक रेलवे स्टेशन है। डोबरिच नगर की जनसंख्या लगभग १७ हज़ार, हास्कोवो की १६ हज़ार, रातज़ा की १५ हज़ार, स्टानिमाका की १५ हज़ार, राजग्राड की १५ हज़ार और सिस्टोव की १४ हज़ार है। बर्गस काला सागर के तट पर नगर तथा बन्दरगाह है यहां से बल्गेरिया का व्यापार दूसरे देशों के साथ होता है। गुस्टेण्डिल नगर की जनसंख्या १६ हज़ार है ट्रनोवो की १४ हजार है। ट्रनोवो प्राचीन राजधानी है। लिलिस्ट्रिया नगर उत्तर पूर्व की ओर डैन्यूब नदी पर एक बन्दरगाह है। इनके सिवा मंगोलिया सर्विया, वासोलिको आदि नये बन्दरगाह हैं।



सोफिया नगर

सोफिया के गिरजाघरों में प्रत्येक सोमवार तथा बृहस्पतिवार को पूजा तथा प्रार्थना करने वालों की भीड़ लगी रहती है। अलिक्जंडर नेव्स्की का मठ बड़ा ही सुन्दर है। जब बल्गेरिया को तुर्कों के हाथ से छुटकारा मिला तो यह मठ उसी स्वतन्त्रता की स्मृति में बनाया गया है। गिरजा घरों के अन्दर ही बल्गर लोगों के सनातनी विचार देखने को मिलते हैं।

रीला का प्रसिद्ध मठ रीला पर्वत की घाटी में बना है। रीला श्रेणी बल्गेरिया में सब से सुन्दर पर्वतीय श्रेणी है। सोफिया नगर से मिला हुआ विटोश की पहाड़ी है जो जाड़े के दिनों में बरफ से ढकी रहती है यह साल भर हरी भरी तथा सुन्दर रहती है। विटोशा पहाड़ी को एक पठार होकर मार्ग जाता है। सोफिया नगर पठार के ऊपर समुद्र तल से १५०० फुट की ऊँचाई पर स्थित है। नगर के कुछ बाहरी भाग पहाड़ी ढालों पर हैं।

पहाड़ी सड़कें अच्छी नहीं हैं फिर भी यात्रा सुगमता

के साथ की जा सकती है। पर्वतीय दृश्य बड़े सुन्दर हैं और चारों ओर हरियाली दिखलाई पड़ती है। सोफिया के समीप ही दुबनीटजा का छोटा नगर है। वहां तम्बाकू का रोजगार होता है बाजार में देहात के लोगों की भीड़ लगी रहती है। स्त्रियां अपने सुन्दर वस्त्र पहिन कर बाजार में जाती हैं।

रीला पर्वत पर बरफ जमी रहती है और वह देखने में बड़ा मनोहर प्रतीत होता है। बल्कान के लोग सुअर के बच्चों का मांस बहुत पसन्द करते हैं। पहाड़ी सड़कें इतनी रोड़ेदार हैं कि उन पर चलना कठिन होता है फिर भी किसान लोग सुअर के बच्चों को उन्हीं मार्गों द्वारा बाजार करने के लिये खुशी के साथ आते जाते हैं।

रीला पर्वतीय श्रेणी में रीलस्का की छोटी नदी है। इस नदी से सोफिया नगर को पानी तथा बिजली मिलती है।

अलिक्जण्डर नेव्स्की के मठ का मैदान वर्गाकार बना है। वहाँ आँगन में पत्थर के चौकों का फर्श बना हुआ है। आँगन के चारों ओर साधुओं के लिये कमरे



सोफिया का एक बाज़ार।



सोफिया का मज़दूर।



बलगेरिया का एक किसान



बलगेरिया की सीमा के पास डेन्यूब नदी का एक दृश्य

बने हैं। कमरों की संख्या चालीस है और उनमें १००० यात्री ठहर सकते हैं आँगन के मध्य में एक बड़ा दुर्ग है जो कई वर्षों का बना हुआ है और बहुतेरे शत्रुओं का सामना कर चुका है।

वहां पर दसवीं शताब्दी में रीला का जान नामक साधु रहता था। अजायब घर के अन्दर दानपत्र है। यह दान-पत्र चौदहवीं सदी के हैं। दानपत्र में उस भूमि का वर्णन है जो मठ में लगी हुई है। तुर्की शासन (५०० वर्ष) काल में यह धार्मिक स्थान राष्ट्रीय जीवन का केन्द्र बना हुआ था।

मन्दिर में ईस्टर और गुडफ्राइडे का त्योहार बड़े समारोह के साथ मनाया जाता है। मठ के बड़े साधु को इगूमेन कहते हैं। त्योहार के अवसर पर मठ का बड़ा साधु और दूसरे साधुओं के आगे आगे एक दीवा ले कर चलता है। सभी साधुओं के हाथ में दीवे रहते हैं। इन दीवों के प्रकाश से समस्त मन्दिर का मैदान प्रकाशित हो जाता है।

गिरजे घर के अन्दर जिस द्वार हो कर प्रवेश होता है जहां पर कुछ साधु एक कपड़ा ऊपर उठाये खड़े रहते

हैं। कपड़े पर ईसा मसीह का चित्र रहता है सभी लोग प्रवेश करते समय नीचे झुक कर प्रभु ईसा के चित्र का आदर करते हैं। सारा कार्य बड़े आदर तथा शक्ति के साथ होता है। रीला मठ के समीप ही जेम्स बोरचियर की समाधि है। वह टाइम्स पत्र का सम्बाद-दाता था। उसे बल्गेरिया के निवासी इतना प्यार करते थे कि मरने पर उसका चित्र बल्गेरिया के एक टिकट पर निकलता था।





रोज़गार तथा खान खोदना

बल्गेरिया में रोज़गार बहुत कम होता है। वहाँ का प्रधान रोज़गार तम्बाकू की पत्ती तयार करना, गुलाब का इत्र बनाना और आटा पीसना है। इसके सिवा घरेलू रोज़गार का सामान तयार किया जाता है जो देशी बाज़ारों में बिकता है। १६२६ ई० में तम्बाकू और गुलाब के तेल को छोड़ कर दूसरे रोज़गारों में ६ करोड़ रुपया लगाया गया था। किसान तथा नीचे वर्ग वाले सूती कपड़े, जूते आदि अपने काम के लिये स्वयम् तयार कर लेते हैं।

कहा जाता है कि बल्गेरिया में खनिज सम्पत्ति बहुत है परन्तु वहां पर सब से अधिक प्रसिद्ध वहां की मुलायम लोहे की खानें हैं। यह खानें लगभग सबकी सब राज्य के अधिकार में हैं। १६२६ ई० में कुल १,१४,००० टन लोहा निकाला गया था जिसमें से १४७,५०० टन निजी खानों से निकला था। बल्गेरिया में जितना कोयला निकलता है उससे वहाँ की देशी आवश्यकता की पूर्ति हो जाती है और यदि महँगी का समय हुआ तो थोड़ा कोयला बाहर भी भेजा जा सकता है। इसके सिवा तांबा और सीसा आदि भी खानों से निकाले जाते हैं।

खेती

बलगेरिया की भूमि बनों तथा घास के मैदानों को छोड़ समस्त वहां के किसानों के अधिकार में है। वहां के किसान अधिकांश लकड़ी के बने हुये हलों का प्रयोग करते हैं। बीज हाथ से बोया जाता है और खाद का प्रयोग कम किया जाता है।

गत महायुद्ध के पहले बल्गेरिया की मुख्य उपज गेहूँ थी। महासमर के पश्चात् नाज की उपज में कमी हुई और तम्बाकू की उपज बढ़ गई। गत महायुद्ध में तथा टर्की के साथ युद्ध होने के कारण ही वहां तम्बाकू की उपज में बढ़ती हुई है।

१९०९-११ ई० तक में बल्गेरिया के अन्दर लगभग २५२ हजार सामान बाहर से मँगाया गया और बल्गेरिया में ६७२०० हजार मन सामान की उपज हुई। १९०९-११ ई० में १७२७६ हज़ार मन सामान बाहर भेजा गया था। १९२४-२७ ई० तक औसत से प्रति वर्ष ७३२ हजार मन सामान बाहर से मँगाया गया था और ६४६८ हजार मन सामान बाहर भेजा गया तथा

५४७४८ हजार मन की उपज हुई थी। उपज के सम्बन्ध में एक आवश्यक बात यह है कि महँगे नाज तथा सामान की उपज बढ़ाई गई, मशीनों आदि का प्रयोग किया गया, जिससे प्रति एकड़ भूमि में उपज की बृद्धि की गई। ईख, कपास ऐसे महँगे सामान अधिक मात्रा में उगाये गये थे पशुओं को भी अधिक मजबूत बनाने का उपाय किया गया। जनसंख्या के ध्यान से योरुप के देशों में बल्गेरिया में भेड़ों की संख्या अधिक है। मांस आदि सामान अब बाहर कम भेजा जाता है।

देश दर्शन

बल्गर जाति

बलगर जाति यूगोस्लाव जाति की एक शाखा है। वह स्लाव भाषा बोलती है। उनकी भाषा प्राचीन बलगर भाषा कहलाती है। बलगर लोग छोटे कद, भारी शकल चौड़ा चपटे मुख लम्बे सिर तथा वर्गाकार कंधे वाले होते हैं। फिलिप्पोपोलिस कोटेल और पूर्वी रूमेलिया के निवासी सुडौल तथा कुछ अच्छे चेहरे वाले होते हैं। इन प्रान्तों के लोग चोटी को छोड़कर समस्त सिर के बाल मुँडवाये रहते हैं। रोडोप पर्वतों तथा फिलिपोपोलिस जिले में पोमाकी लोग रहते हैं। यह मुसलमान हैं।

बलगर राष्ट्रीय संगीतों के अन्दर युद्ध-ध्वनि के संकेत पाये जाते हैं। उनके संगीतों में ओर्फियस का नाम पाया जाता है।

साधारण बलगर लोगों का भेष बहुत साधारण होता है। मर्द लोग भेड़ की खाल और ऊनी वस्त्र का भेष धारण करते हैं। स्त्रियां झूलदार लहँगा पहिनती हैं। यह लहँगा धारी तथा बेलदार होता है और घुटनों तक रहता



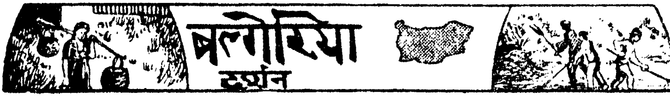
है। वह फलालैन का पेटीकोट (साया) धारण करती हैं जो उनके पांव तक रहता है।

खेतों का घर साधारण रूप से एक बड़े मैदान में रहता है। यह घर एक मंजिले होते हैं। स्तम्बल, झोपड़े लकड़ी के बने होते हैं। वहां पर एक रसोई वाटिका और सुअर तथा पालतू चिड़ियों के लिये खुला स्थान रहता। घर के अन्दर मामूली मेज, बेंच, कपड़े रखने के संदूक कुछ बर्तन रहते हैं। वह दो भागों में बटा रहता है। दालान और रसोई घर एक में रहता है। उसके पीछे कुटुम्ब के सोने का कमरा रहता है। माता-पिता के सोने के लिये एक चारपाई और बच्चों के लिये फर्श पर चटाइयां रहती हैं परन्तु अब बलगर किसानों की यह दरिद्रता दूर हो रही है।

यूनान की भाँति ही बल्गेरिया में भी शादी ठीक करने वाले लोग होते हैं। ७५० रुपया मूल्य निश्चय हो जाने पर ब्याह होता है। ब्याह बड़े समारोह के साथ किया जाता है। ब्याह में बर तथा कन्या अँगूठी का परिवर्तन एक दूसरे के साथ करते हैं और पुजारी का आशीर्वाद ग्रहण करते हैं। फर्श पर एक बड़ा सफेद चद्दर

बिछाया जाता है उसी पर मेहमानों की मेहमानी की जाती है। शादी निश्चय हो जाने के पश्चात् एक या दो साल समय वर को दिया जाता है। उसी बीच वह अपना भविष्य घर बार ठीक करता है। कन्या के माता पिता वर की सहायता घर बार बनाने में करते हैं। ब्याह के एक दिन पहले कन्या अपना प्रथम तथा अन्तिम स्नान करती है वह अपने पुराने कपड़े अपनी छोटी सहेलियों को दे देती है। उसे नये कपड़े फूल फल और मिठाइयां आदि बदले में भेंट के रूप में दी जाती हैं। उसकी माँ भोजन के लिये गोल घर की बनी हुई रोटी भेजती है। ब्याह साधारण तौर पर रविवार के दिन गिरजाघर या घर के नये घर पर होता है। ब्याह के समय बड़ा नाच गाना होता है।

——:o:——



वर्तमान सेना

नेविली की संधि के बाद बलगेरिया के पास १,७६५ किलोमीटर सीमा और २६७ किलोमीटर काला सागर का तट है। संधि के अनुसार अनिवार्य सैनिक सेवा की मनाही कर दी गई थी और स्वयम् सेवक लोग अपना नाम सेना में लिखा सकते थे। वहाँ कुल २० हज़ार सेना रखने की आज्ञा है। तीन तोपें, २ छोटी खाली वाली मोटरें, १५ मशीन गन या स्वयं काम करने वाली बन्दूकें प्रति हज़ार पीछे हैं। दूसरे प्रकार के शस्त्र वाले सैनिक १० हज़ार हैं। सीमावर्ती गार्डों की संख्या ३ हज़ार है। इस प्रकार बलगेरिया में कुल ३३ हज़ार बन्दूकें हैं। अफसर लोगों को कम से कम २० साल तक सेना में काम करना पड़ता है। दूसरे प्रकार के सैनिकों को बारह साल तक सेना में रहना पड़ता है। अफसरों को शिक्षा प्रदान करने के लिये वहां पर केवल एक स्कूल है। अफसरों की अवस्था २० साल से ऊपर होनी चाहिये। ४५ साल तक लोग कैप्टन ५० साल तक के मेजर और लैफ्टिनेण्ट कर्नल, ५५ साल तक के लोग कर्नल और ६० वर्ष तक के लोग जनरल होते हैं।

निजी सैनिकों को शिक्षा प्रदान करने के लिये अलग से शिक्षा का प्रबन्ध है।

राष्ट्रीय रक्षा करने वाला मन्त्रीमंडल सब से बड़ा सैनिक शासन माना जाता है। मन्त्रीमंडल के अन्दर भांति भांति के इंस्पेक्टर निरीक्षण करने के लिये होते हैं। आवश्यकता पड़ने पर युद्ध काउन्सिल की बैठक होती है।

सीमावर्ती रक्षक सैनिकों की आठ टोली है। प्रत्येक टोली को तीन सीमावर्ती स्थानों की देख भाल रखनी पड़ती है। टर्की के साथ साथ जो सीमा है उसकी लम्बाई १३० मील, यूनान की सीमा लगभग २६० मील, यूगोस्लाविया की लगभग १० मील, रूमानिया की सीमा लगभग ३७५ मील है।



व्यापार

बलगेरिया का भीतरी व्यापार खेती के सस्ते सामानों का कारखानों के बने हुये सामान के साथ परिवर्तन में होता है। बलगेरिया के समस्त आयात का $\frac{1}{3}$ भाग, रूई का सामान $\frac{1}{3}$ भाग, मशीनें और शेष भाग दूसरे धातु सम्बन्धी सामान होते हैं। तम्बाकू, नाज की उपज बढ़ जाने के कारण निर्यात में बहुत कुछ परिवर्तन हो गया है। १६२० ई० में बलगेरिया के समस्त निर्यात का ६० प्रतिशत नाज था परन्तु १६२४-२६ ई० तक में नाज का निर्यात घट कर केवल ३३ प्रतिशत हो गया। गेहूँ के व्यापार में बड़ी कमी हो गई। पहले गेहूँ बलगेरिया से बाहर बहुत जाता था। परन्तु अब बहुत कम गेहूँ बाहर भेजा जाता है। पहले तम्बाकू कम होती थी इसी कारण समस्त निर्यात की केवल २ प्रतिशत तम्बाकू १६१० ई० में बाहर भेजी गई थी परन्तु अब तम्बाकू का व्यापार उपज के साथ ही साथ अधिक हो गया है।

बल्गर भाषा के निर्माता

१८५० ई० के पश्चात् बलगर भाषा उन्नति करने लगी। उन्नीसवीं सदी के आरम्भ काल और अंत काल के लेखकों ने बलगर जाति के अन्दर देश-प्रेम, देश-भक्ति तथा स्वतंत्रता के बीज बोये। उस समय के लेखकों का विश्वास था कि भाषा सामाजिक जीवन की आवश्यकताओं के अनुसार होनी चाहिये। इस प्रकार उनकी कविताएँ और ड्रामे सामाजिक बातों पर आघात करने वाले हैं। कारलोव ने बलगेरियन भाषा में गल्प सम्बन्धी गद्य लिखे हैं। आज तक उसके लेखों का आदर होता है। बोटेव बलगेरिया के कवियों में एक महान व्यक्ति माना जाता है। उसे पद्य तथा अपने देश से अपार प्रेम था। उसने स्वतंत्रता तथा देश-प्रेम रचनाएँ की हैं। उसने आग लगाने वाले क्रान्तिकारी संगीत लिखे हैं जिन्हें पढ़ तथा सुन कर मनुष्य का खून खौलने लगता है।

पीआर स्लावोकोव ने राष्ट्रीय संगीतों तथा कविताओं द्वारा बलगर भाषा को पूर्ण कर दिया है। उसने



अपनी कवितायें प्राचीन किस्से कहानियों तथा रिवाजों पर लिखी हैं। वह बलगेरिया के पौराणिक काल का पिता कहा जाता है।

१८७८ ई० के पश्चात् जब बलगेरिया विदेशी शासन से अलग हुआ तो वहाँ पर भाषा और कला शैली का रूप भली भांति बदल गया और उस समय प्रत्येक भांति के विद्वानों तथा विशारदों की उत्पत्ति हुई। लेखकों को शहरी शिक्षा से फुर्सत मिली और वह अपना समय बलगर भाषा की शैली तथा कविता के सत्य रूप में लगाने लगे। उस काल के लेखकों में वासोव का नाम सबसे अधिक प्रसिद्ध है। उसने सैकड़ों कवितायें पुस्तकें तथा नाटक लिखे हैं। उसकी सबसे प्रसिद्ध पुस्तकें जुये के नीचे, नया देश और कज़लार की रानी आदि हैं।

एक मिकैलोव्स्की नामक प्रसिद्ध बलगर लेखक की मृत्यु १६२७ ई० में हुई। उसकी शिक्षा फ्रांस में हुई। इसलिये वह फ्रांसीसी भाषा तथा विज्ञान का प्रसिद्ध विद्वान था। उसने बहुत सी पुस्तकें लिखी हैं। बाई

कागनो उसकी एक प्रसिद्ध पुस्तक है जिसमें उसने एक विचित्र बलगर मनुष्य का जीवन चित्र खींचा है।

निकोलाई लिलीन, टोडोर ट्रनावोव, डिमचोडिचेलिया नोव और लुद्मिल स्टोयानोव आदि आधुनिक बलगर कवि तथा लेखक हैं।

डोरागावे और एलिज़ेबेथ बेल्चेवा नामक स्त्रियों की लिखी पुस्तकें सुन्दर, सरल और कला से पूर्ण हैं। कल्पित कथा के लेखकों में जोर्डन योवकोव, डोब्रेनेमीरोव सी कॉन्स्टैण्टी आदि हैं।



आने जाने के साधन

१८७८ ई० में बल्गेरिया में केवल एक रेलवे लाइन रस्तचुक-वार्ना थी। यह १३७ मील लम्बी थी और अँग्रेज़ी कम्पनी द्वारा बनाई गई थी। १८७३ ई० में पूर्वी रूमेलिया में सरम्बे से फिलिपोपोलिस और वहाँ से तुर्की सीमा को १२२ मील लम्बी रेलवे लाइन वैरनहिर्च ने बनाई। इसकी एक शाखा ६६ मील लम्बी याम्बोली को जाती है। टर्की की सरकार ने इस रेलवे लाइन का ठीका ओरियन्टल रेलवे कम्पनी को १९५८ तक के लिये दे दिया है। १९०८ ई० में उसे बल्गेरिया की सरकार ने ले लिया। एक रेलवे लाइन सर्विया की सीमा से पूर्वी रूमेलिया तक बनाई गई है। यह सोफिया नगर को छूती है। १८२२ ई० में बल्गेरिया की सरकार ने बेलोवो-सरम्बे लाइन को तुर्की सरकार से छीन लिया और इस प्रकार कुस्तुन्तुनिया तथा और पश्चिमी राजधानी के मध्य आने जाने का मार्ग बनाया। १८८८ ई० में २४० मील १८९९ ई० में ७७७ और १९०२ ई० में ८८० मील रेलवे लाइन सरकार की ओर से खोली गई। १९०८ ई० तक यह समस्त रेलवे लाइन बल्गेरियन

सरकार की हो गई। रेडामीर सोफिया-शुमेन रेलवे लाइन नवम्बर १८९९ ई० में खोली गई थी। इस के खुलने से बलकान और डैन्यूब के धनी जिलों से सम्बन्ध हो गया और वर्ना बन्दरगाह से सोफिया राजधानी मिल गई। नदी के दूसरी ओर रूमानियन रेलवे लाइनों से समेविर और रस्तचुक रेलवे लाइनों द्वारा सम्बन्ध लगा हुआ है इस से स्लोनीका और एजियन सागर को सीधा मार्ग जाता है।

बल्गेरिया में सड़कों की अब भी बहुत कमी है। बल्गेरिया की सड़कें तीन भागों में विभाजित हैं १—सरकारी सड़कें २—जिलों की सड़कें जिन का प्रबन्ध जिले की सभायें करती हैं। तीसरी प्रकार की वह सड़कें हैं जो गांवों को एक दूसरे से मिलाती हैं। बल्गेरिया के अन्दर नहरें नहीं हैं। डैन्यूब नदी में जहाज चलते हैं। नदियों में यात्रा करने का प्रबन्ध गैगरिन स्टीमशिप लाइन करती है। नाज का व्यापार यूनानी सौदागरों के स्टीमरों द्वारा होता है। बल्कान सागरी व्यापार बल्गेरिया की स्टीमशिप कम्पनी करती है। वार्ना और बर्गस बन्दरगाहों पर विदेशी जहाज आकर ठहरते हैं।

डाक और तार में बड़ी शीघ्रातिशीघ्र उन्नति हुई है। बल्गेरिया में ५००० टेलीग्राफ लाइन और टेलीफोन लाइनों में भी काफी उन्नति हुई है।

बल्गेरिया में दो बड़े प्राचीन मार्ग हैं। एक मार्ग मध्य एशिया से दक्षिणी रूस के स्टेप तथा घास के मैदानों में होकर आता है और दक्षिण की श्रोर बल्कान पर्वत के घाटों को जाता है। दूसरा मार्ग जलसंयोजक द्वारा एशियाई कोचक को योरुप से मिलाता है। यह मार्ग मुर्तजा को घाटी हो कर मोरावा को श्रोर फिर बेल्ग्रेड/ को जाता है। यह मार्ग बल्गेरिया की राजधानी सोफिया हो कर जाते हैं।

देश दर्शन

यात्रा

योरुपीय तुर्की के आगे बलगेरिया का देश है। दोनों की सीमा के पास काफी ऊँचे पहाड़ हैं। भीतर की ओर भी पहाड़ी देश हैं। बीच बीच में हरी भरी घाटियाँ हैं। मारिज़ा इस भाग की प्रधान नदी है। पर यह नदी इतनी छोटी है कि इसमें नावें नहीं चल सकतीं इधर इसकी चौड़ाई दस-पन्द्रह गज़ से अधिक नहीं है। ऊँची पहाड़ियों के नीचे घिरी हुई यह छोटी नदी बड़ा चक्करदार मार्ग बनाती है। इस्तम्बोल (कुस्तुन्तुनिया) से भीतर की ओर जाने के लिये यही एक मात्र मार्ग है। इसमें यह घाटी और समीप वाला प्रदेश बड़ा शान्त मालूम होता है। भोले-भाले ग़रीब किसान मकई, गेहूँ, कपास, तम्बाकू के खेतों में मेहनत से काम करते हैं। कहीं बीसियों कोसों में गुलाब के खेत हैं। औसत से यहाँ तीन-चार लाख मन गुलाब के फूल हर साल चुने जाते हैं। यहाँ का इत्र योरुप भर में प्रसिद्ध है और दूर दूर बिकने जाता है। कहीं कहीं शहतूत के पेड़ मिलते हैं जो रेशम के कीड़ों का पेट भरते हैं। खेतों से दूर



अक्सर पहाड़ी ढालों पर गड़रिया अपनी भेड़ों के झुण्ड को चराता दिखाई देता है। छोटे गांवों में रोज के घरेलू काम से छुट्टी पाते ही स्त्रियाँ कपड़ों पर सुन्दर काम करती हुई मिलती हैं।

इन शान्त दृश्यों को देख कर कोई अनुमान नहीं कर सकता कि यहाँ कभी खूँख्वार लड़ाइयाँ हुई होंगी पर वास्तव में यहाँ फौजों के खूनी कारनामे सब से अधिक मिलते हैं। अब से लगभग १२०० वर्ष पहले यहाँ बलगर लोगों ने डेन्यूब के मार्ग से आना शुरू किया। वे एशिया के हूण लोगों के सम्बन्धी थे। कुछ ही समय में उन्होंने इस देश में बस्तियाँ बसा डालीं। उनके लिये यह देश आदर्श था। एक समय में बल्गेरिया का राज्य अब से कहीं अधिक बड़ा था। ईजियन सागर से डेन्यूब तक और काला सागर से एड्रियाटिक सागर तक इनका राज्य फैल गया था। इसके बाद तुर्कों के हमलों ने इनके राज्य को छिन्न-भिन्न कर दिया। इसके बाद बल्गेरिया एक प्रकार से फौजी पड़ाव हो गया। यह देश तुर्कों की फौजों के रास्ते में पड़ता था। बार-बार फौजों के गुज़रने से यह देश इतना तबाह हो

गया कि जब बाल्कन प्रायद्वीप के दूसरे देश स्वतन्त्र हो गये उस समय भी वहाँ टर्की का राज्य था। अन्त में रूस की सहायता से उन्नीसवीं सदी के अन्त में यह देश भी स्वाधीन हो गया। इसको स्वाधीन कराने में यहाँ के स्कूलों से रूसी फौजों से कुछ कम सहायता न मिली पर टर्की से छुटकारा पाने पर भी यहाँ शान्ति न हुई। कई बार पड़ोसियों से लड़ाइयाँ हुईं। इसके बाद बड़ी लड़ाई छिड़ गई। इस लड़ाई में पहले तो बल्गेरिया वालों ने तटस्थ रहने की कोशिश की पर अन्त में उन्होंने टर्की और जर्मनी का साथ दिया। लड़ाई के अन्त में बलगेरिया का क्षेत्रफल बहुत कम हो गया। इस समय सारे देश का क्षेत्रफल केवल ४०,००० वर्ग मील है। इसकी आबादी ५५ लाख है। उत्तर की ओर लग-भग ३०० मील की लम्बाई में नदी पर एक भी पुल नहीं है लेकिन डेन्यूब का दक्षिणी किनारा अधिक ऊँचा है इसलिये जहाँ घाट है वहीं किले बना दिये गये हैं।

टर्की से बल्गेरिया प्रवेश करने में भाषा की कठिनाई पड़ी। गाड़ी में फिलिप्पोपोलिस स्टेशन पर



भाग्य से एक दो ऐसे सज्जन आ गये जो कुछ अँगरेज़ी बोल सकते थे। इनकी सहायता से मैंने कुछ आवश्यक वाक्य बल्गेरियन भाषा के नोट कर लिये। ये सज्जन आगे जा रहे थे। फिलिप्पोपोलिस का किला प्रसिद्ध है लेकिन नगर छोटा है इसलिये मैंने सोफिया में उतरने का निश्चय किया। सोफिया देखने में मुझे एक बल्गेरियन सज्जन से बड़ी सहायता मिली। ये सज्जन अँग्रेज़ी नहीं जानते थे पर गाँधी जी के भक्त थे। सोफिया बल्गेरिया का सबसे बड़ा शहर है। इसकी आबादी लखनऊ से कुछ कम है। सोफिया नगर १५०० फुट की ऊँचाई पर इस्कर नदी की घाटी में बसा हुआ है। पूर्व और पश्चिम के मार्ग में महत्त्वपूर्ण स्थिति होने से यहाँ का किला बड़ा प्रसिद्ध है। इस शहर के कुछ भागों में बहुत गरीब लोग रहते हैं। सफाई का काम सुअर करते हैं लेकिन कुछ भाग बड़े सुन्दर हैं वहाँ शाही महल, गिरजा और अजायबघर हैं। यहाँ का गिरजा पुराने रूसी गिरजे से सम्बन्ध रखता है इसी से इसे रूसी गिरजा कहते हैं। यहाँ रस्मों पर अधिक ज़ोर दिया जाता है। प्रधान पादरी की सफेद पोशाक और दाढ़ी

बड़ी रोबीली थी पर लोगों के चेहरे से मालूम पड़ता था कि वे लोग बड़ी भक्ति से पादरी के व्याख्यान सुनते थे। छोटे-छोटे बच्चे टिकटें बेच कर गिरजे के लिये चन्दा इकट्ठा करते थे।

सोफिया का स्नानागार योरुप भर में प्रसिद्ध है। गरम चश्मे के ऊपर एक तिमंजिला इमारत है। टिकट लेकर अन्दर जाना पड़ता है। अन्दर जगह जगह पर गरम पानी के नल हैं। बीच में गरम साफ पानी का कुण्ड है। इसमें नंगे नहाने की चाल है। सभी उमर के लोग नंगे नहा रहे थे। मुझे भी विवश होकर उनकी नकल करनी पड़ी। पानी पहले बहुत गरम लगता है। इसका तापक्रम लगभग १७० अंश फारेनहाइट है पर पीछे से यहाँ देर तक स्नान करने में बड़ा आनन्द आता है।